बिहार विधान-सभा वादवृत्त ।

मंगलवार, तिथि १६ अप्रील, १९६३ ।

भारत के संविधान के उपबन्ध के अनुसार एकत्र विधान-सभा का कार्य-विवरण ।

सभा का अधिवेशन पटने के सभा-सदन में मंगलवार, तिथि १६ अप्रील, १९६३ को पूर्वाह्न ११ बजे अध्यक्ष डा० लक्ष्मीनारायण सुधांशु के सभापतित्व में हुआ ।

पुलिस कमीशन के सम्बन्ध में ।

REGARDING POLICE COMMISSION.

*श्री रामानन्द तिवारी—अध्यक्ष महोदय, दुःख के साथ मैं एक चीज की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ । यों तो जो अल्प-सूचित प्रश्न या किसी विशेष प्रस्ताव पर वाद-विवाद या संकल्प की सूचना हमलोग सम्बन्धित मंत्री को देते हैं उसे स्वीकार करना या नहीं करना माननीय मंत्री के अधिकार की बात है । मगर क्या उनके लिए यह उचित नहीं है कि स्वीकार किया गया या नहीं किया गया इसकी जानकारी सम्बन्धित सदस्य को करा दें ? बहुत दुःख के साथ कहना चाहता हूँ कि आज से १०, १५ दिन पहले मैंने एक प्रस्ताव की सूचना , जो पुलिस कमीशन से सम्बन्ध रखता है, मंत्री महोदय को दी थी । इसके बारे में मैंने एक चिट्ठी उनको लिखा था और उनके अधिकारी से बातें भी की थीं । मगर अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आज तक मुझे अपने पत्र का उत्तर नहीं मिला । इसके बारे में मैं आपकी रूलिंग चाहता हूँ ।

अध्यक्ष—इसमें रूलिंग की कोई बात नहीं है । यह तो शिष्टाचार की बात है कि कोई भी चिट्ठी लिखे तो उसका उत्तर देना चाहिए ।

श्री एकनारायण चौधरी—अध्यक्ष महोदय, मुझे भी अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि एक माननीय मंत्री ने वादा किया था कि विद्यापति स्मारक के सम्बन्ध में वक्तव्य देंगे, मगर १२ दिन हो गया और अभी तक वक्तव्य नहीं दिया गया ।

अध्यक्ष—जैसी स्थिति होगी उसके मुताबिक वक्तव्य दे सकते हैं ।

था। अगस्त, १९६२ में जो समझौता हुआ था उसमें की कुछ मांगें फिर शामिल थीं। इसलिए जब एक समझौता लागू है तो इंडस्ट्रियल ट्रिब्यूनल ऐक्ट के मुताबिक फिर कुछ मांगों पर हड़ताल कराना इल्लिगल है। इनक्रीज ऑफ वेजेज का डिमान्ड उसमें था और इसमें भी है। इसी वजह से फिर नई मांग पेश करके स्ट्राइक कराना कोड ऑफ कंडक्ट के खिलाफ है, इल्लिगल है। कायदा यह है कि all avenues of peaceful settlement should be tried, तो अध्यक्ष महोदय, डिप्टी लेबर कमिश्नर ने रिक्वेस्ट किया, लेबर कमिश्नर ने कहा कि हम बैठकर करा देंगे, हमने भी खुद आश्वासन दिया लेकिन ध्यान नहीं दिया गया।

अध्यक्ष महोदय, इससे भी दुखद बात यह है कि जब इमर्जेंसी शुरू हुई तो जितने लेबर ऑर्गेनिजेशन्स हैं, आई० एन० टी० यु० सी०, हिन्द मजदूर सभा तथा ए० आई० टी० यु० सी० आदि की मीटिंग हुई और सभी पार्टी के लोगों ने सपोर्ट किया कि there will be no slow-down production and strike जब आरबिट्रेशन में मामला भेजा गया तो किसी तरह भी, किसी हालत में भी स्लो डाउन या स्टौपेज ऑफ वर्क नहीं होना चाहिए। कम-से-कम दो चार दिनों तक आश्वासन की बात को देख लेना चाहिए था। स्थिति वहां यह है कि उनके लिए जो कोड ऑफ कनडक्ट है उसके भी खिलाफ यह है, उसके अनुसार भी यह इल्लिगल है। इंडस्ट्रियल ट्रूस रिजोल्यूशन जो तीन नवम्बर का है, उसमें जो कंसटीच्युशन बना है उसके भी खिलाफ यह है। और सब से बढ़कर बात यह है कि जेनरल डिमांड जो है उसे हमने ट्रीबुनल को १३ तारीख को रेफर कर दिया है, इसकी वजह से भी यह इल्लिगल है। मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा, वे अपने को प्रोग्रेसिव होने का दावा करते हैं और कहते हैं कि इस इमर्जेंसी के वक्त में हम देश के साथ हैं, अतः जहां देश की संपत्ति तैयार हो रही है उसको बन्द करके, प्रोडक्शन में बाधा न उपस्थित करें। मैं समझता हूं कि अगर आपने इसे नहीं समझा तो हो सकता है कि देश के दूसरे लोग आपको दूसरी नजरों से देखेंगे इसलिए मैं अपील करूंगा कि देश में इमर्जेंसी का ख्याल करके, चीनी आक्रमण का ख्याल करके, आप भी दावा करते हैं कि हम इस समय आपके साथ हैं, इतने बड़े अन्डरटेकिंग को बाधा न पहुंचाएं और स्ट्राइक न होने दें। हमने १३ तारीख को तीन इनडिविजुअल के केस को रेफर कर दिया है ट्रीबुनल में। पांच-सात आदमी ने मिलकर फिर दिया उसको भी, हालांकि वह रजिस्टर्ड यूनियन नहीं है, रेफर कर दिया। सारी बातों को देखकर मैं अपील करूंगा कि इस इल्लिगल तरीके के काम को छोड़कर लोग अपने-अपने काम पर आ जायें।

बिहार विधान परिषद् द्वारा यथापारित बिहार खादी ऐंड विलेज इंडस्ट्रीज (अमेंडमेंट) बिल, १९६३ की एक प्रति का सभा मेज पर रखा जाना।

LAYING ON THE TABLE A COPY OF THE BIHAR KHADI AND VILLAGE INDUSTRIES (AMENDMENT) BILL, 1963, AS PASSED BY THE BIHAR LEGISLATIVE COUNCIL.

उप-सचिव—महाशय, मैं बिहार विधान परिषद् द्वारा तिथि ११ अप्रील, १९६३ को यथापारित बिहार खादी ऐंड विलेज इंडस्ट्रीज (अमेंडमेंट) बिल, १९६३ की एक प्रति सभा की मेज पर रखता हूं।

श्री राहुल सांकृत्यायन के निधन पर शोक।

CONDOLENCE ON THE DEATH OF SHRI RAHUL SANKRITYAYAN.

अध्यक्ष—माननीय सदस्यगण, आज मुझे एक अत्यन्त दुखद घटना की सूचना देनी है।

भारत के सुविख्यात साहित्यिक, इतिहासज्ञ और भाषाविद्, श्री राहुल सांकृत्यायन का निधन ता० १४ अप्रील, १९६३ के प्रात: ११ बजकर ४५ मिनट पर दार्जिलिंग में हो गया। मृत्यु के समय उनकी आयु ७० वर्ष की थी।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन एक ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा और असाधारण विद्वत्ता से हिन्दी साहित्य के प्राय: सभी अवयवों को पुष्पित-पल्लवित किया। हिन्दी भाषा और साहित्य की श्रीवृद्धि के लिये उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण शोध-कार्य किये। उनका संकल्प इतना महान् था कि वे दुर्गम पर्वतों को लांघ कर तिब्बत गये और वहां से हजारों दुर्लभ पुस्तकें लेकर स्वदेश लौटे। ये पुस्तकें इतिहास की अमूल्य निधियां हैं जिनसे प्राचीन भारतीय साहित्य और संस्कृति की अमूल्य झांकी मिलती है। इन्हीं पुस्तकों के आधार पर हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक नया युग जोड़ा गया है—सिद्धकाल, जो हिन्दी साहित्य का आदिकाल है।

इतिहासकार राहुल सांकृत्यायन ने एशिया और यूरोप के अनेक देशों का भ्रमण किया और अपनी भ्रमण अवधि में प्राचीन इतिहास और संस्कृति के क्षेत्र में शोधपूर्ण कार्य किए। "मेरी यूरोप यात्रा", "तिब्बत में सवा वर्ष" आदि महत्वपूर्ण यात्रा-साहित्य हैं।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन एक अनन्य भाषा शास्त्री थे। उन्हें ३६ विभिन्न भाषाओं का ज्ञान था।

राहुल जी कई वर्षों तक रूस के लेनिनग्राड विश्वविद्यालय में इंडोलौजी के प्राध्यापक थे। कोलम्बो विश्वविद्यालय में वे भारतीय विषयों के अध्ययन विभाग के प्रधान भी रह चुके थे।

महापंडित सांकृत्यायन ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया था। भारतीय संविधान का हिन्दी अनुवाद करने में उनका सक्रिय योगदान रहा है।

हिन्दी के प्रकांड विद्वान् होने के अतिरिक्त राहुल जी संस्कृत और पाली साहित्य के भी ज्ञाता थे। उन्होंने सब मिलाकर लगभग १७० पुस्तकों की रचना की है। उनकी प्रमुख कृतियों में "वोल्गा से गंगा", "मध्य एशिया का इतिहास", "बाइसवीं सदी", "दोहा कोष" आदि काफी लोकप्रिय हैं।

आरंभ में, राहुल जी ने भारत तथा विशेषत: बिहार के राजनीतिक क्षेत्र में भी बहुत योगदान किया है। स्वाधीनता संग्राम में भी उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी के निधन से भारत ने एक प्रसिद्ध साहित्य सेवी, इतिहासकार और भाषा शास्त्री को खो दिया है। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति प्राय: कठिन है। भगवान् उनकी आत्मा को चिरशांति और उनके शोक विह्वल परिवार को धैर्य प्रदान करें।

अब, अन्य सदस्य, जो श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहें, करें ।

श्री विनोदानन्द झा—अध्यक्ष महोदय, लगातार कुछ दिनों से जो खबरें हमारे देश में महारथियों के निधन के बारे में आती रही हैं उनमें एक स्तंभ, महान् स्तंभ श्री राहुल सांकृत्यायन जी के निधन की है । श्री राहुल सांकृत्यायन जी ने सार्वजनिक जीवन सर्वप्रथम सदाकत आश्रम से प्रारंभ किया था और उन्होंने कांग्रेस के माध्यम से स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए कोई भी कसर उठा नहीं रखा था । कांग्रेस के क्षेत्र में त्याग, सेवा, कार्यक्षमता, कार्यकुशलता, देशभक्ति की अपूर्व कीर्त्ति रही है लेकिन उनका निर्माण, खासकर नेतृत्व का निर्माण किसी राजनैतिक जीवन के लिए नहीं हुआ था । उनकी अवधि बहुत बड़ी थी और इसीलिए उन्होंने यहां से रूस और तिब्बत तक की सफर की । ज्ञान की खोज में रूस में वे अध्यापक ही नहीं रहे, उनकी कीर्त्ति यथेष्ट रही । फिर तिब्बत से जो ज्ञान का भंडार हिन्दुस्तान के लिए संगृहीत किया इसके लिए उनकी कीर्त्ति अमर रहेगी । राहुल जी हिन्दी भाषा के प्रेमी थे और साथ-ही-साथ हिन्दुस्तान के सर्व भाषा-भाषी थे । हिन्दुस्तान में उनको छोड़कर उनके ऐसा लिग्वीस्ट बहुत कम मिलेंगे । दुर्भाग्य की बात है कि उनको भी जाना पड़ा और ऐसे मौके पर जाना पड़ा जब उनकी सेवा की बहुत आवश्यकता थी । हमलोग उनके प्रति केवल शोक ही प्रकट न करें बल्कि उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करें ।

मैं सोच रहा था कि ऐसे मौके पर हमेशा सदन में परिपाटी रही है कि काम को बन्द कर दिया जाय । आज हमारे सामने एक राजनैतिक ही नहीं, बल्कि भाषा शास्त्री, हिन्दी शास्त्र के ज्ञानी और बहुत बड़े विद्वान् के निधन की सूचना है । मैं समझता हूँ कि आज भी परिपाटी वही रहेगी और जो प्लान पर वाद-विवाद के लिए दो दिन रखा गया है उसमें से आधा दिन काटकर आज के काम के लिए पूरा कर देंगे ताकि सदन का जो काम है वह भी पूरा हो जाय । मैं इस बात को आपके सामने और सदन के सामने एक सिफारिश के तौर पर रखता हूँ और आशा करता हूँ कि सबों को यह मान्य होगी ।

*श्री रऊफुल आजम—अध्यक्ष महोदय, मौत की जो घड़ी आती है वह अपने वक्त पर आती है, वह अपने वक्त से न एक मिनट इधर न एक मिनट उधर जाती है । वह अपना काम वक्त पर करती जाती है । बहुत सदमे के साथ श्री राहुल जी के इंतकाल के बारे में इजहार करना है । वे कौन शख्स थे, उनके क्या कारनामे थे और किस वजह से उनके लिए हमलोग दुखी हैं वे बातें हमलोगों के सामने आयी हैं । वे ३६ लैंग्वेज के माहिर थे । मैं बड़े अदब के साथ कह सकता हूँ कि वे बहुत बड़े अलमबरदार थे । जितनी किताबें उनकी हमलोगों ने देखी और पढ़ी हैं उनसे यह साफ जाहिर होता है कि वे इल्म के सच्चे दोस्त थे । लेकिन कजा और कद्र ऐसी चीज है जो हर इंसान के लिए लाजिमी है और जब वक्त आ जाता है तो दुनियां का कोई शख्स उसे टाल नहीं सकता है । उनकी मौत दार्जिलिंग में १४ तारीख को हुई । इससे इस मुल्क को बहुत ज्यादा नुक्सान हुआ खासकर इल्म के दोस्तों को और जिनको उनसे सरोकार था । इस जगह को पूरा करनेवाला अब इस वक्त कोई शख्स मौजूद है या नहीं यह कहना मुश्किल है । हमलोग दुआ करें कि उनको इटरनल पीस मिले और जो अच्छी चीज उन्होंने छोड़ दी है उन को पूरा करने के लिए हमलोग हमेशा कोशिश करते रहें, ताकि साहित्य की

प्रगति कर सकें । मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से प्रार्थना करता हूँ कि संवेदना का प्रस्ताव bereaved फैमिली को भेज दिया जाय ।

*श्री कर्पूरी ठाकुर—अध्यक्ष महोदय, स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, मानवता के पुजारी,

---

अपूर्व पुरातत्व वेत्ता, महान् भाषा विज्ञान वेत्ता और हिन्दी साहित्य के महारथी पंडित श्री राहुल सांकृत्यायन के निधन से आज हम सभी मर्माहत हैं । जो लोग भारत के राजनीतिक, विशेषकर बिहार के राजनीतिक आंदोलन से सम्बन्ध रखते रहे हैं उनको पता है कि प्रारंभ में साहित्य साधन के साथ-साथ राहुलजी राजनीतिक गतिविधि में, प्रगतिशील आंदोलनों में, किसान मजदूर आंदोलनों में गहरी दिलचस्पी रखते थे । हमने देखा है कि १९३७, १९३८-३९ और १९४० में बिहार में जो जोरदार किसान आंदोलन भिन्न-भिन्न जिलों में हो रहा था उनमें राहुलजी किस प्रकार क्रियाशील होकर भाग लिया करते थे, जेल यातना भोगते थे । सप्ताहों तक जेल अधिकारियों के अन्याय के विरुद्ध अनशन किया करते थे । हम जहां राजनीतिक क्षेत्र में राहुलजी को पाते हैं वहां यह निर्विवाद है कि उनका सर्वोन्मुखी विकास साहित्यिक क्षेत्र में हुआ था । वे ज्ञान के पिपासु थे, ज्ञान की पिपासा ने उन्हें बाध्य किया था कि न केवल भारत की भिन्न-भिन्न भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करें बल्कि बहुत सारी विदेशी भाषाओं का भी वे परिश्रमशीलता और अध्यवसाय के द्वारा ३६ भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करें और भिन्न-भिन्न देशों का पर्यटन करें । इस कारण उन्हें न केवल भारत ने ही मान्यता दी बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत ने भी । वे एक निर्भीक लेखक थे, गंभीर विचारक थे और हिन्दी भाषा के अनन्य पुजारी थे । मुझे याद है दरभंगा में प्रांतीय साहित्य सम्मेलन हो रहा था कुछ वर्षों पहले जिसमें भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों के विद्वान् एकत्र हुए थे । वहां एक पुस्तक के बारे में उन्होंने उल्लेख किया तो मिथिला के एक विद्यार्थी ने कहा कि यह फोर्थ क्लास की पुस्तक है, इसपर राहुलजी ने कहा कि यह चौथे वर्ग की पुस्तक है । जब वे बोलते थे तो इस बात का विचार रखते थे कि हिन्दी भाषा के शब्दों का ही प्रयोग किया जाय । पूसा में आज से २५ वर्ष पहले अखिल भारतीय किसान सम्मेलन हो रहा था और वहां लगभग ५०,००० किसान उपस्थित थे लेकिन उस सम्मेलन में उन्होंने अपना भाषण भोजपुरी भाषा में दिया था ।

जहां वे हिन्दी के अन्यतम पुजारी थे वहां साथ-ही-साथ भोजपुरी के भी । सचमुच में परिश्रम, प्रतिभा एवं बुद्धि का समन्वय राहुलजी में था । १६-१७ घंटे तक बैठ कर कलम चलाते रहते थे, काम करते रहते थे, दिन रात उनके लिए कुछ था ही नहीं । उनके जैसे महान् विद्वान्, दार्शनिक हिन्दी भाषा के पुजारी को खोकर आज हम सब निर्धन हो गए हैं । जो अपूरणीय क्षति हुई है, मैं नहीं जानता कि उसकी पूर्त्ति निकट भविष्य में संभव है या नहीं । मानवता के उस पुजारी और साहित्य मंदिर के उस पुजारी के प्रति हम अन्यतम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और शोक-संतप्त परिवार के लिए संवेदना प्रकट करते हैं ।

*श्री सुनील मुखर्जी—अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ

से राहुल जी के निधन पर शोक प्रकट करता हूँ और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ । आपकी तरफ से और दूसरे माननीय सदस्यों की तरफ से जो भावना को व्यक्त किया गया है मैं उसके साथ हूँ । लेकिन मैं उनमें से हूँ जिनके साथ उनका खास गहरा सम्बन्ध

है, इसलिए दो बात मैं कहना चाहता हूँ । राहुल जी महान् दार्शनिक, महान् साहित्यिक, महान् लिंग्विस्टिक के अलावे महान् देश प्रेमी और देश के अन्दर अंग्रेजों के जमाने में और इसके बाद भी जो हालत किसान मजदूरों की रही है उसके खिलाफ अपना विचार प्रकट ही नहीं करते रहे बल्कि इसके संघर्ष में अगुआई करते रहे हैं और उसके लिए उनको कितने मौकों पर जेल जाना पड़ा, सारण जिले में लाठी खानी पड़ी, पुलिस के हाथों से उनका सर दो टुकड़ा हो गया । मुझे वे दिन याद हैं जब मैं बहुत लम्बे अर्से के बाद बिहार में जेल से बाहर आया और राहुल जी से संपर्क हुआ । उस वक्त वे महान् बौद्ध दार्शनिक हो गए थे और अन्त में आते-आते वे भौतिकवाद कार्लमार्क्स को अपनाया । यही वजह है कि समाजवाद दल का जो गठन सर्वप्रथम १९३९ में बिहार में हुआ उस समय वे इसके पहले सदस्यों में से थे । चाहे वे किसी दल के हों वे कभी भी दलगत सीमा के अन्दर नहीं रहे और न साम्यवाद दल ने ही कभी उनको ऐसा करने को विवश किया । नतीजे के तौर पर जो सर्वतोन्मुखी प्रतिभा थी उनका विकास होता ही रहा । मैं एक नमूना दूंगा जब वे देउली कैम्प में १९४१ में थे, मैं भी था और अभी-अभी माननीय सदस्य श्री कर्पूरी ठाकुर ने उनकी मेहनत करने की बात कही, देख कर हमलोग हैरान होते थे कि १९, २० घंटा लगातार लिखते ही रहते थे और एक साल के अन्दर "दर्शन-दिग्दर्शन और समाज का विकास" नामक दो मोटी किताबें लिख डालीं । उसमें उन्होंने संसार के सभी दार्शनिक विचारों को रखा है । आखिर में कुछ दिनों से वे बीमार रहे, बहुत-सी किताबें उन्होंने लिखीं, बहुत-सी छपीं लेकिन वे ऐसे स्वभाव के थे कि कभी भी पब्लिशर्स से उन्होंने पैसे के लिये झगड़ा नहीं किया । नतीजे के तौर पर बहुत से पब्लिशर्स अपने ढंग पर चले और राहुल जी की आर्थिक स्थिति बिगड़ती ही गई यहां तक कि इलाज के लिये उनके पास कुछ न रहा । यह सही है कि सरकार की ओर से और दूसरी संस्थाओं की ओर से सहायता की गई । यह भी उनका स्वभाव था कि वे कभी भी किसी से कुछ सौदा नहीं करते थे बल्कि वे लिखते थे समाज के लिये, देश के लिये, वे जो सही समझते थे वे लिखते थे और किताबें छपती थीं और छपाते थे । उसी तरह से देश के लिए कोई न्यायपूर्ण बात के लिये आन्दोलन में आते थे तो बिना शर्त्त कहते थे कि चाहे लाठी खानी पड़े या जेल जाना पड़े या अनुशासनहीनता करना पड़े कभी भी किसी मौके पर वे नहीं झुके । ऐसे महान् पुरुष जिन्होंने अपनी राजनैतिक चेतना के आधार पर जिस नीति को अपनाये उसपर अडिग रहे । उनके जैसा महान् व्यक्ति की क्षत्तिपूर्त्ति हमारे लिये काफी कठिन होगी । उनके निधन से हमारे दल को खास तौर पर एक वेदना पहुँची है । मैं फिर एक बार उनकी आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और शोक-संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रगट करता हूँ ।

*श्री जनार्दन तिवारी—अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री राहुल जी राहुल सांकृत्यायन के

नाम से पुकारे जाते हैं । वे गरीबों के नेता थे, मैं जब १४ वर्ष का था और हाई स्कूल में पढ़ता था उस समय मैंने उनको देखा था सीवान में जब वे किसानों पर जो वहां अत्याचार हो रहे थे उसकी मीटिंग को प्रिसाइड करने के लिए गए थे । उस समय मैंने देखा कि उनको कितनी मार लगी थी, वे करीब मृतवत् हो गए थे । उनको देखकर उनके प्रति काफी श्रद्धा मुझे हुई । अध्यक्ष महोदय, राहुल जी अपने ही देश के नहीं, सारे संसार में उनका नाम था और उनकी मृत्यु से देश की ही नहीं, संसार की अपूरणीय क्षति

हुई । वे ३६ भाषाओं के विद्वान् थे । उनके निधन से हिन्दी जगत को एक बहुत बड़ा धक्का लगा है । वे लेनिनग्राड और कोलम्बो में प्रोफेसर थे जो उनकी विद्वत्ता का एक चिन्ह है । अध्यक्ष महोदय, अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से मैं उस दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि उनको शांति प्रदान हो ।

श्री बरियार हेम्ब्रॉम—अध्यक्ष महोदय, जो शोक का प्रस्ताव राहुल जी के संबंध में

आपने हमलोगों के सामने रखा है उसके साथ हमलोग हैं । वे एक महान् विद्वान् और हिन्दी के महारथी थे जो हमारे बीच से आज चले गये । तो जो प्रस्ताव अभी है उसका मैं पूरा समर्थन करता हूँ और अपनी पार्टी की तरफ से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें ।

*श्री राम सेवक सिंह—अध्यक्ष महोदय, मैं और अपने दल की ओर से राहुल जी के

प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ । आज उनकी मृत्यु से देश को महान् क्षति हुई है । हिन्दी जगत के प्रसिद्ध लेखक आज हमारे बीच से चल बसे । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और शोक-संतप्त परिवार के प्रति संवेदना अर्पित करता हूँ ।

*श्री प्रभुनाथ सिंह—माननीय अध्यक्ष महोदय, सभा नेता के बोलने के बाद अलग

होकर जो मैं बोल रहा हूँ इसका कारण यह है कि हमारा राहुल जी के साथ एक घनिष्ठ संबंध था । राहुल जी ने परसागढ़ मठ को, जिसमें पन्द्रह हजार की तहसील थी और ग्यारह, बारह सौ की काश्तकारी थी, उसके वे अधिकारी थे। १९२१ में जब वे देश के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिये कांग्रेस में शामिल हुए तो महंथ ने कहा कि कांग्रेस में शामिल मत होओ, वह सरकार का एक बहुत बड़ा खैरखाह आदमी था । लेकिन राहुल जी ने मठ की संपत्ति को लात मारकर कांग्रेस में शामिल होना पसंद किया । जब वे बक्सर जेल में थे तो वहां सभी तरह के लोग थे । कुछ मुसलमान भाई भी थे । उनको कुरान पढ़ानेवाला कोई आदमी नहीं था । उस वक्त राहुल जी अठाइस वर्ष के थे । उन्होंने कुरान पढ़ाना स्वीकार किया । कुरान पढ़नेवालों में मुहम्मद शफी साहब जैसे आदमी भी थे । पन्द्रह-बीस दिन के बाद जब दरभंगे के मौलाना वहाब साहब आये तो उनको फुर्सत मिली । पहले उनका नाम राम औतार दास था, बाद में राहुल सांकृत्यायन नाम पड़ा जबकि वह बौद्ध बन गये । लोगों ने कहा कि आप हिन्दी में कुरान लिखिये । तो उन्होंने कहा कि हिन्दी में तो लिखूंगा ही साथ-साथ संस्कृत में भी लिख देता हूँ ताकि संस्कृत के पंडित जो बड़े कट्टर होते हैं, वे भी पढ़कर समझ सकेंगे और इस काम को छः महीने के अन्दर समाप्त किया जब वे बक्सर जेल में थे । इसके अलावे और बहुत सी बातें उनके संबंध में कहीं जा सकती हैं, जैसे वे बहुत बड़े विद्वान् थे, किसानों के, गरीबों के मसीहा थे । उनमें देश के लिये प्रेम था । वे राजनीतिज्ञ थे । दुनिया की तमाम अच्छी चीजों को वे ग्रहण कर लेते थे । वे उद्भट विद्वान्, भाषाविद्, इतिहासज्ञ, ज्योतिष शास्त्र के भी जानकार थे । १९२१ में जब वे बक्सर जेल में थे तो वे २७ भाषाओं के पंडित हो चुके थे । उनमें सरल स्वभाव, विद्वता, प्रतिष्ठा आदि सभी चीजें एक साथ मौजूद थीं । इसलिये उनको सिर्फ विद्वान् न

कहकर मानव कहना उचित होगा जिसका मिलना एक जगह मुश्किल है । कोई विद्वान् होता है, कोई त्यागी होता है लेकिन उनके अन्दर सभी चीजें थीं । वे देश-विदेश में भ्रमण करते रहते थे और जहां जाते थे वहां कुछ दिन ठहरकर वहां की भाषा को सीख लेते थे । आज ऐसे महापुरुष के निधन से हमलोग दुखी हैं और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

अध्यक्ष—अब हमलोग एक मिनट मौन खड़े होकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करें ।

(सभी सदस्यों ने एक मिनट तक मौन खड़े होकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की ।)

अध्यक्ष—सभी माननीय सदस्य इस बात से सहमत होंगे जैसा कि माननीय सभा नेता ने कहा है कि महापंडित राहुल जी के सम्मान में आज सदन की बैठक स्थगित होनी चाहिए । आज के कार्यक्रम को कार्य-मंत्रणा समिति की राय लेने के बाद हम आपको सूचित कर देंगे । आज की बैठक राहुल जी के सम्मान में कल ग्यारह बजे दिन तक स्थगित की जाती है ।

सभा बुधवार, दिनांक १७ अप्रील, १९६३ को ११ बजे दिन तक स्थगित की गई ।

गोविन्द मोहन मिश्र,
उप-सचिव,
बिहार विधान-सभा ।

पटना, तिथि १६ अप्रैल, १९६३

दनिक-निबन्ध ।

(मंगलवार, तिथि १६ अप्रैल, १९६३ ।)

पृष्ठ ।

पुलिस कमिशन के सम्बन्ध में १

अत्यावश्यक सार्वजनिक महत्व के विषय पर ध्यानाकर्षण:

श्री राम अवतार सिंह, स० वि० स० ने बरौनी तेल शोधक कारखाने में मजदूरों द्वारा हड़ताल के सम्बन्ध में ध्यानाकर्षण की सूचना दी, जिस पर राज्य मंत्री श्री दारोगा प्रसाद राय ने वक्तव्य दिया । २—५

सभा-पटल पर रखे गये कागजात:

बिहार विधान परिषद् द्वारा यथापारित विहार खादी ऐंड विलेज इंडस्ट्रीज (अमेंडमेंट) बिल, १९६३ की एक प्रति उप-सचिव द्वारा सभापटल पर रखी गयी । ५

श्री राहुल सांकृत्यायन के निधन पर शोक:

सभा ने श्री राहुल सांकृत्यायन के निधन पर शोक प्रकट किया तथा सदस्यों ने एक मिनट तक मौन खड़े होकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की । ६—११

बिहार विधान-सभा प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली के नियम २०२ तथा २०४ के अनुसरण में बिहार विधान-सभा सचिवालय द्वारा प्रकाशित एवं सचिवालय मुद्रणालय, बिहार, पटना द्वारा मुद्रित ।

बि०स०मु० (एल०ए०) ११६—८७४—२७-६-१९६३—मा०च०मा०